

क्या इस बार की चुनावी वैतरणी पार करा पायेंगे 'तारणहार' मोदी- अबकी बार सचमें मोदी सरकार ?

By : INVC Team Published On : 5 Apr, 2014 07:19 PM IST



{सोनाली बोस} 2014 के लोकसभा चुनाव की पहली परीक्षा 07 अप्रैल को होनी है। हम और आप चाहे माने या ना माने लेकिन इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि इस बार के चुनाव 'मोदीमय' फैक्टर से बूरी तरह सराबोर हैं और रहेंगे। भाजपा का 'मोदी लहर' में बहना काफी सारे राजनीतिक पंडितों को रास नहीं आ रहा है। चुनावी कंपैनिंग का समूचा केन्द्र बिन्दू मोदी जी का होना पार्टी के विरोधी हलकों में लगातार चर्चा का विषय बना हुआ है। राजनीतिक ज्ञाता इस तरह 'व्यक्ति पूजा' के फार्मुले को पचा पाने में मुश्किल महसूस कर रहे हैं जो कि काफ़ी हद तक लाजमी भी है क्योंकि इस तरह के ट्रेड का चलन आज तक किसी पार्टी द्वारा किसी चुनाव में नहीं हुआ है।

अगर कुछ सियासी पंडितों की दलील को मानें तो भाजपा का इस तरह पार्टी की ideological values को दरकिनार कर सिर्फ एक विशेष व्यक्ति पर अपनी पूरी आस्था लगा देना काफी बर्बता भरा बर्ताव है जो पार्टी के बाकि नेताओं को 'बागी' बनाने का अहम कारण रहा है। वैसे भी मोदी जी के लिये ये बात कही जाती है कि वो जितने कुशल वक्ता हैं उतने ही कुशल प्लानर भी हैं। अपने प्रतिद्वन्द्वियों को किस तरह कुचला जाना है ये वो बखूबी जानते हैं। या तो आप उनसे प्यार करें या फिर दुश्मनी.... बीच का रास्ता अपनाने का option उनकी dictionary में नहीं है। अडवाणी जी और जसवंत जी की स्थिति से हम सभी बखूबी वाकिफ हैं जो मोदी के इस गुण की तारीफ भी करती है।

लेकिन आखिर क्या वजह है कि जो पार्टी पिछले कई सालों से गुटबाज़ी को प्रोत्साहित करने के लिए जानी जाती थी और जिसकी इसी वजह से हमेशा निन्दा ही हुई है, आज वही पार्टी लोकतंत्र के महापर्व में शामिल होने के लिये इस हद तक बदल गई है ? तो इसका सिर्फ एक ही जवाब नज़र आता है और वो है कि अंततः भाजपा को अपना 'तारणहार' मोदी के रूप में मिल चुका है। और इसी तारणहार का हाथ थाम बीजेपी 'लोकसभा चुनाव' की वैतरणी पार करना चाहती है। अब ये वैतरणी पार कर बीजेपी लोकसभा में स्वर्गीक खुशी पाती है या नहीं ये तो 16 मई के बाद ही मालूम होगा लेकिन इतना तो तय है कि मोदी जी कि छत्रछाया तले तमाम पार्टी नेता अपने आप को एक विजेता ही मान रहे हैं। इसमें दो राय नहीं है कि वैचारिक और राजनीतिक मुद्दों पर बिखरे हुए और भटके हुए दल को मोदी के नेतृत्व में एक दिशा मिली है। जो कि भारतीय राजनीति के पटल पर कई नये आयाम स्थापित कर सकती है।

दरअसल, बीजेपी अगर किसी एक लीडर को नहीं चुनती है तो बहुत मुमकिन है कि तीसरी बार भी वो लोकसभा चुनाव में मुँह के बल गिर जाये। इसीलिये मोदी जी की वाकचतुरता और बेबाक भाषा शैली में बीजेपी को अपना भविष्य सुरक्षित नज़र आ रहा है और इसीलिये पार्टी ने अपना सारा दाँव इस घोड़े पर लगा दिया है। लेकिन फिर भी अडवाणी और जसवंत सिंह के वाक्यों ने अभी भी इस सवाल पर विराम नहीं लगाया है कि बीजेपी के भीतर अभी भी मोदी जी के लिये पूरी तरह एक राय नही बन पाई है। लेकिन जसवंत जी के पार्टी से निष्कासन और शनिवार को अडवाणी जी के गान्धीनगर संसदीय क्षेत्र से चुनाव पर्चा दाखिले के समय मोदी जी की मौजूदगी के ज़रिये पार्टी ने अपनी एकता साबित करने की कोशिश अवश्य की है।

वैसे भी जहाँ तक बीजेपी संगठन का ताल्लुक है तो ये बात किसी से छुपी नहीं है कि इस पार्टी की कमान हमेशा से ही 'अनिर्वाचित लोगों और संगठनों' के हाथ में रही है, जिन्होंने निर्वाचित नेताओं को अपने इशारों पर नचाया है। लेकिन अब लगता है कि इन सभी अवरोधों को इस पार्टी ने दूर करने का मन बना लिया है और अपने इस अधूरेपन के एहसास को अब बीजेपी और संघ ने मोदी की नेतृत्व क्षमता और वाक्पटुता से भरने की तैयारी कर ली है।

फिर भी बीजेपी और उसके नेता जानते है कि मोदी की शख्सियत से गुजरात दंगों के दाग धोने का फार्मुला अभी भी उन्हें नहीं मिला है और बहुत मुमकिन है कि इन आम चुनावों में पार्टी को इसका खामियाज़ा भी भुगतना पड़े। लेकिन फिर भी इस बात को लेकर सभी खासे आशावित हैं कि यूपीए की नाकामयाबी उनके नेता की कुछ बुराईयों और कमज़ोरियों को पाटने में कारगर साबित होगी।

ये गौरतलब है कि राजनाथ जी ने जैसे ही पार्टी की कमान संभाली उन्होंने देश की नब्ज़ को पहचान अपनी पार्टी के तुरूप के इक्के को

सबके सामने समय रहते शो कर दिया। राजनाथ जी ये बखूबी जानते हैं कि अगर बीती पराजयों के क्रम को तोड़ना है तो एक जोरदार दांव चलना जरूरी है और इसीलिये उन्होंने मोदी पे अपना दांव लगाया है। बनारस से मोदी को उतारना हिन्दु भावनाओं को सहलाने के लिये और अपने जाहिर बोट बैंक को सुरक्षित रखने की ही एक कड़ी है। लेकिन केजरीवाल और अंसारी के साथ मोदी की बनारस सीट की जद्दोजहद क्या रंग दिखायेगी ये तो आने वाला समय ही बता पायेगा।

चलते चलते ये भी बताना लाजमी है कि मोदी के आलोचकों, जिनमें उनकी अपनी पार्टी के कुछ लोग भी शुमार हैं इस बात को मानने से अभी भी साफ़ इंकार करते हैं कि 'मोदी लहर' ने बीजेपी के भाव या स्टॉक को सियासत में उछाला है, बल्कि उनका मानना है कि 'सत्ता विरोधी' लहर और सरकार की नाकामयाबी ऐसी वजहें हैं जो इन 2014 के लोकसभा चुनावों में बीजेपी के पक्ष में काम करेंगी। फिलहाल कुछ भी कहना जल्दबाजी होगी, चुनाव के पहले चरण की उल्टी गिनती शुरू हो चुकी है और नतीजों की भविष्यवाणी करना बेहद मुश्किल काम है। बीजेपी का एक गुट और देश का ज्यादातर मतदाता अभी भी ये मानता है कि मोदी जी पर दांव लगाना जोखिम का खेल है लेकिन फिर भी इतना ही कहना चाहेंगी जिन्दगी तो नाम ही जोखिमों से खेलने का है और शायद भाजपा ऐसा ही लेने लायक एक जोखिम है।

खैर आईये शुभारंभ करते हैं भारतीय लोकतंत्र के इस महापर्व का और अपनी बौद्धिक क्षमता और अपने ख्यालों को सर्वोपरी रखते हुए ये सुनिश्चित करते हैं कि अपने नागरिक होने के फर्ज को जरूर पूरा करेंगे और चुनावों में मत डालने जरूर जायेंगे..... आखिर अगर हम जोखिम नहीं लेंगे तो हमारा भविष्य जरूर जोखिम भरा हो जायेगा।

.....



सोनाली बोस,

लेखिका सोनाली बोस वरिष्ठ पत्रकार है, उप सम्पादक – अंतराष्ट्रीय समाचार एवम विचार निगम -

URL : <https://www.internationalnewsandviews.com/क्या-इस-बार-की-चुनावी-वैतर/>



12th year of news and views excellency

Committed to truth and impartiality

Copyright © 2009 - 2019 International News and Views Corporation. All rights reserved.